RAWATSAR P.G. COLLEGE
'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)
DATE: 25 January 2025
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

संस्कृति और नैतिकता का बदलता स्वरूप

Priyanka Meena, Department of Sociology (Vidya Sambal Yojana) Government Girls College, Narayanpur, Kotputli Behror, Rajasthan, India

Abstract

संस्कृति और नैतिकता किसी भी समाज के मूलभूत स्तंभ होते हैं, जो समय के साथ बदलते रहते हैं। आधुनिकता, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक परिवर्तन इन बदलावों को प्रभावित करते हैं। पहले जहाँ नैतिकता परंपरागत मूल्यों और धार्मिक आस्थाओं पर आधारित थी, वहीं आज यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानवाधिकारों और सामाजिक समानता की ओर उन्मुख हो रही है। इसी प्रकार, संस्कृति भी विभिन्न प्रभावों को आत्मसात करते हुए विकसित हो रही है, जिसमें आधुनिक जीवनशैली, डिजिटल मीडिया और अंतःसंस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस शोधपत्र में संस्कृति और नैतिकता के बदलते स्वरूप के प्रमुख कारणों, प्रभावों और चुनौतियों पर विचार किया गया है।

Keywords : संस्कृति, नैतिकता, परिवर्तन, आधुनिकता, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, सामाजिक परिवर्तन, परंपरागत मूल्य, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानवाधिकार, सामाजिक समानता, जीवनशैली, डिजिटल मीडिया, अंतःसंस्कृति, प्रभाव, चुनौतियाँ।

Article : संस्कृति और नैतिकता किसी भी समाज की पहचान होती हैं, लेकिन समय के साथ इनमें बदलाव भी होता रहता है। मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ संस्कृति और नैतिकता की अवधारणाएँ भी परिवर्तित होती रहती हैं। आधुनिक युग में वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक गतिशीलता के कारण संस्कृति और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

वर्तमान स्थिति में प्रायः यह अनुभव होता है कि हमारा समाज निरन्तर नैतिक पतन की ओर अग्रसर होता चला जा रहा है। भौतिक जीवन को महत्व प्रदान करने वाले उच्च मध्यमवर्गीय सामाजिक मानव अपने निहित स्वार्थों की दौड़ में अपने कर्त्तव्यों सिद्धान्तों तथा आदर्शों को भूल चुके हैं। सामाजिक व्यवहार में बालकों की अनैतिकता के भी अनेक उदाहरण प्रति दिन देखने को मिलते हैं। शिक्षणालयों में भी इस का प्रभाव बढ़ रहा हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली शिक्षण कार्य मात्र तक सीमित है तथा उसमें भी परिणाम का आग्रह अत्यधिक है। सम्पूर्ण शिक्षण व्यवस्था में नैतिक एवं धार्मिक प्रवृत्तियों को उचित स्थान नहीं मिल पाया है। विद्यार्थियों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता, उदण्डता, अश्रद्धा एवं कर्त्तव्यहीनता की भावना इसी का परिणाम है। फुटपाथ पर बिकने वाला सस्ता साहित्य, सिनेमा के अश्लील दृश्य, नग्न चित्र, क्लब, कैब्रे डांस, मद्यपान, यौनाचार की उन्मुक्तता का दृष्टिकोण आज के वातावरण में सामाजिक दुराचारों एवं अनैतिक कार्यों को प्रश्रय प्रदान कर रहा है। नीति युक्त कर्म या नैतिक कर्म एक प्रकार का कर्ज है, जिसमें कर्जदार तो स्पष्ट ज्ञात होता है, किन्तु कर्ज देने वाला कौन है? साधारणतः हम माता–पिता, जाति, समाज, जनपद, राष्ट्र या ईश्वर को कर्जदाता मानते हैं और हमारे नैतिक कर्म इन्हीं की ओर उन्मुख होते हैं। बालक को हम इन नैतिक कर्मो की जानकारी नैतिक मूल्यों की शिक्षा के माध्यम से देते हैं। बालकों को कुछ नैतिक कर्मो की शिक्षा परिवार से मिलती है, कुछ सामुदायिक नेतृत्व से कुछ समाज से, कुछ भौगोलिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों से एवं कुछ राष्ट्र से मिलती हैं। जिस प्रकार भौतिक जगत की गतिशीलता का अध्ययन भौतिकशास्त्र करता है उसी प्रकार वैयक्तिक और सामाजिक जीवन की गतिशीलता का अध्ययन नीति शास्त्र करता है। समाज की शांति और सुरक्षा की व्यवस्था नीति द्वारा होती है अतः समाज के कर्णधारों को नीति का ज्ञान आवश्यक है।

डॉ. एस. राधाकृष्णन नैतिकता को व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के विकास का आधार मानते थे। उनके विचार से नैतिकता सद्‌गुणों का समन्वय मात्र नही है वरन् यह एक व्यापक गुण है तथा इसका प्रभाव मनुष्य के समस्त क्रिया–कलापों पर होता है और इससे हमारा व्यक्तित्व प्रभावित होता है। अतएव हमारे सामाजिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए नैतिक एवं चारित्रिक शिक्षा का संवर्द्धन आवश्यक हैं। पं. मदन मोहन मालवीय का विचार था कि "नैतिकता, मनुष्य की उन्नति का आधार हैं। नैतिकता से रहित व्यक्ति पशुओं से भी निकृष्ट है। नैतिकता के अभाव में कोई भी व्यक्ति, समाज या देश अवश्य पतनोन्मुख हो जायेगा। मानव इतिहास सदा से इस सत्य की घोषणा करता रहा है। नैतिकता व्यापक गुण है और किसी भी कीमत पर हमें इसे नहीं छोड़ना चाहिये।

संस्कृति की परिभाषा और अवधारणा – संस्कृति एक व्यापक अवधारणा है, जो किसी समाज की जीवनशैली, रीति–रिवाज, परंपराएँ, कला, भाषा, धर्म और नैतिक मूल्यों का समुच्चय होती है। यह एक पीढ़ी से दूसरी

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

पीढ़ी तक स्थानांतरित होती रहती है और समय के साथ बदलाव भी अनुभव करती है।
विभिन्न विद्वानों ने संस्कृति की अलग—अलग परिभाषाएँ दी हैं —
एडवर्ड टायलर के अनुसार "संस्कृति वह जटिल संपूर्णता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, परंपराएँ और वे सभी क्षमताएँ व आदतें सम्मिलित हैं, जो मनुष्य समाज का एक सदस्य होने के नाते अर्जित करता है।"
महात्मा गांधी के अनुसार, "संस्कृति मनुष्य के बाहरी और आंतरिक विकास का सामंजस्यपूर्ण संयोजन है।"
रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार, "संस्कृति किसी राष्ट्र की आत्मा होती है, जो उसके विचारों, भावनाओं और परंपराओं में समाहित होती है।"
संस्कृति का बदलता स्वरूप — संस्कृति स्थिर नहीं होती, बल्कि समय और परिस्थितियों के अनुसार उसमें बदलाव आता रहता है। कुछ प्रमुख कारक जो संस्कृति में परिवर्तन लाते हैं। विभिन्न देशों और समाजों के बीच संपर्क बढ़ने से संस्कृति में बदलाव आता है। विभिन्न संस्कृतियों का आपसी प्रभाव आधुनिक समाज में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल संचार के माध्यमों ने संस्कृति को तेजी से प्रभावित किया है। लोग अब वैश्विक संस्कृति को अपनाने लगे हैं। उच्च शिक्षा और वैज्ञानिक सोच ने पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती दी है, जिससे संस्कृति में बदलाव आया है। गाँवों से शहरों की ओर पलायन और आधुनिक जीवनशैली ने पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव लाया है। समाज में जब बड़े सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन होते हैं, तो वे सांस्कृतिक मूल्यों को भी प्रभावित करते हैं।
नैतिकता की अवधारणा और उसका परिवर्तन — नैतिकता उन मूल्यों और सिद्धांतों की प्रणाली होती है, जो यह निर्धारित करती है कि क्या सही है और क्या गलत। यह समाज की समग्र सोच, धार्मिक मान्यताओं और कानूनी व्यवस्था से प्रभावित होती है। नैतिक शब्द नीति (नी+क्तिन्) से बनता है। इसका तात्पर्य है ले चलना। कुमार्गों से हटाकर सन्मार्ग पर ले चलना ही नीति है। इसका अंग्रेजी पर्याय है जिसका अर्थ हैकृ उचित एवं अनुचित व्यवहार को बताने वाला सिद्धान्त। अतः नैतिक वह है जो नीति से सम्बन्ध रखता है।
मूल्य की अवधारणा दृष्टिकोण की भिन्नता के कारण भिन्न प्रकार की हो सकती है। सुखवादी दृष्टिकोण से मूल्य मानवीय आकांक्षाओं के पूरक हैं। बौद्धिक दृष्टिकोण से मूल्य मानवीय प्रज्ञा के साध्यभ्भूत हैं तथा मानव की विवेकशीलता के संरक्षक भी हैं। इसी प्रकार पूर्णतावादी दृष्टिकोण से आत्मोपलब्धि ही मूल्य है। मोरल और एथिकल अर्थात् नैतिकता का उद्भव रूढ़ियों (कस्टम्स) एथेस या मॉर्स से हुआ है क्योंकि रूढ़ियां मनुष्य के मात्र अभ्यास की विधियां ही नहीं थी अपितु वे समुदाय विशेष या समाज द्वारा अनुमोदित भी थी क्योंकि इनका उद्देश्य आत्मकल्याण एवं जनकल्याण था। वर्तमान रूढ़ियुक्त समाज भले ही रूढ़ियों का विरोधी रहा हो किन्तु आज मानवता के कल्याण हेतु उन परम्परागत मूल्यों को अपनाने का औचित्य लक्षित होता है जो मानव को नैतिक बनाने के साथ—साथ मानवजीवन को व्यवस्थित एवं सामंजस्यपूर्ण बनाते हैं। समाज के हित कि लिये वांछित ऐसी व्यवस्था, ऐसा दृष्टिकोण, नैतिक मूल्य कहलाते हैं। इन नैतिक मूल्यों को समाज ने अपने आचरणों, नियमों के अनुसार विभिन्न नाम दिये है जैसे — अचौर्य, अहिंसा, धैर्य, क्षमा, सत्यवादिता, इन्द्रिय निग्रह, अक्रोध, अस्तेय आदि। इन नैतिक मूल्यों का एकमेव उद्देश्य है, अव्यवस्था संघर्ष और असहयोग को दूर कर मानव जीवन में व्यवस्था, सामंजस्य और सहयोग उत्पन्न करना।
नैतिकता के बदलते स्वरूप के कारण — पहले जो बातें नैतिक मानी जाती थीं, वे आज बदल गई हैं, जैसे विवाह, लिव—इन संबंध, महिला सशक्तिकरण आदि। समय के साथ कई नैतिक मान्यताएँ कानूनी बदलावों के कारण परिवर्तित हो जाती हैं, जैसे जातिगत भेदभाव को अब अवैध माना जाना। आधुनिक युग में व्यक्ति की स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया जाने लगा है, जिससे नैतिक मूल्यों में बदलाव आया है। फिल्मों, टीवी शो और इंटरनेट के प्रभाव से समाज में नैतिक मूल्यों की नई परिभाषाएँ उभर रही हैं। संस्कृति और नैतिकता समाज के मूल स्तंभ होते हैं, लेकिन ये स्थायी नहीं रहते। समय के साथ, नई परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार इनका स्वरूप बदलता रहता है। आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है ताकि समाज अपनी जड़ों से जुड़ा रहे और नई संभावनाओं को भी अपनाए। नैतिकता और संस्कृति में बदलाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में हो सकता है,

RAWATSAR P.G. COLLEGE
'Sanskriti Ka Badlta Swaroop Aur AI Ki Bhumika' (SBSAIB-2025)
DATE: 25 January 2025
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 8.152

इसलिए समाज को सतर्क रहकर सही दिशा में परिवर्तन को अपनाना चाहिए। वैश्वीकरण ने दुनिया को एक ग्लोबल विलेज में बदल दिया है। इसके कारण विभिन्न संस्कृतियों और नैतिक मूल्यों का आदान–प्रदान हुआ है। पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भारतीय समाज पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, युवाओं में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और उपभोक्तावाद की प्रवृत्ति बढ़ी है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने संस्कृति और नैतिकता को गहराई से प्रभावित किया है। सोशल मीडिया पर विभिन्न संस्कृतियों और विचारों का आदान–प्रदान होता है, जिससे नैतिक मूल्यों में परिवर्तन आया है। उदाहरण के लिए, डिजिटल युग में गोपनीयता और साइबर नैतिकता जैसे नए मुद्दे उभरे हैं। समाज में महिलाओं की भूमिका, शिक्षा, और आर्थिक स्थिति में परिवर्तन ने संस्कृति और नैतिकता को प्रभावित किया है। उदाहरण के लिए, महिलाओं की शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता ने पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती दी है। आधुनिक युग में विज्ञान और तकनीक के विकास ने धार्मिक मान्यताओं और नैतिक मूल्यों को चुनौती दी है। उदाहरण के लिए, चिकित्सा विज्ञान में कृत्रिम गर्भाधान और जीन संपादन जैसी तकनीकों ने नैतिक प्रश्न खड़े किए हैं।

नैतिकता की परिभाषा और अवधारणा – नैतिकता का तात्पर्य उन मूल्यों, आदर्शों और मान्यताओं से है, जो यह निर्धारित करते हैं कि व्यक्ति और समाज के लिए क्या सही है और क्या गलत। यह एक सामाजिक संरचना का हिस्सा होती है व समय व स्थान के अनुसार बदलती रहती है।

नैतिकता की प्रमुख परिभाषाएँ

अरस्तू के अनुसार, "नैतिकता वह विज्ञान है, जो मानव आचरण को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों का अध्ययन करती है और सही एवं गलत के बीच भेद करने में सहायता करती है।"

इमैनुएल कांट के अनुसार, "नैतिकता वह आचार संहिता है, जो हमें बताती है कि हमारे कार्य किस प्रकार सार्वभौमिक नियमों के अनुरूप होने चाहिए।"

महात्मा गांधी के अनुसार, "नैतिकता का अर्थ केवल सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलना ही नहीं, बल्कि दूसरों की भलाई के लिए कार्य करना भी है।"

स्वामी विवेकानंद के अनुसार, "नैतिकता वह शक्ति है, जो मनुष्य को उच्च स्तर पर उठाती है और आत्मा की शुद्धता को बनाए रखने में सहायता करती है।"

नैतिकता की अवधारणा – नैतिकता किसी भी समाज के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित होती है। यह धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत विचारों से प्रभावित होती है। नैतिकता का स्वरूप समय–समय पर बदलता रहता है, क्योंकि समाज की आवश्यकताएँ और परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं।

नैतिकता के प्रकार – व्यक्तिगत नैतिकता व्यक्ति के अपने मूल्यों और आस्थाओं पर आधारित होती है, जैसे सत्य बोलना, ईमानदारी रखना, दूसरों की सहायता करना आदि। सामाजिक नैतिकता समाज द्वारा स्थापित नियमों और आचरणों से संबंधित होती है, जैसे समानता, न्याय, दया और परोपकार। व्यावसायिक नैतिकता किसी व्यवसाय, संगठन या पेशे से जुड़ी नैतिकता होती है, जैसे व्यापार में ईमानदारी, पारदर्शिता, और नैतिक व्यवहार। राजनीतिक नैतिकता सरकार और प्रशासन से संबंधित होती है, जिसमें सत्यनिष्ठा, जवाबदेही और न्यायपूर्ण शासन शामिल होते हैं। समाज में समय के साथ नैतिकता की परिभाषा बदलती रहती है। कुछ दशक पहले जो बातें अनैतिक मानी जाती थीं, वे आज सामान्य हो गई हैं। इसके कई प्रमुख कारण हैं – विभिन्न संस्कृतियों के संपर्क से नैतिकता में बदलाव आया है। उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का महत्व बढ़ा है। पुराने अंधविश्वासों और रूढ़ियों को तोड़ने के कारण नैतिक मान्यताएँ बदली हैं। सोशल मीडिया, इंटरनेट और डिजिटल क्रांति ने नैतिकता की नई परिभाषाएँ दी हैं, जैसे डिजिटल गोपनीयता का महत्व। पहले जो नैतिक मान्यताएँ महिलाओं को सीमित करती थीं, वे अब बदल गई हैं, और समानता को नैतिकता का हिस्सा माना जाने लगा है। समाज में नए कानूनों के आने से नैतिक मूल्यों में भी बदलाव हुआ है, जैसे समुदाय को स्वीकार करना। नैतिकता और संस्कृति समाज के आधारभूत तत्व होते हैं, लेकिन वे स्थिर नहीं रहते। बदलते समय के साथ नैतिकता की परिभाषा और मान्यताएँ भी बदलती रहती हैं। वर्तमान युग में नैतिकता का स्वरूप अधिक समावेशी, वैज्ञानिक और आधुनिक हो गया है। हालाँकि, यह आवश्यक है कि नैतिकता में बदलाव संतुलित और समाज के हित में हो ताकि मानवीय मूल्य संरक्षित रहें और समाज प्रगतिशील बना रहे।

संस्कृति और नैतिकता के बदलते स्वरूप के प्रभाव – संस्कृति और नैतिकता के बदलते स्वरूप ने

सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार प्रणाली का विघटन और एकल परिवारों का बढ़ना इसका उदाहरण है। युवा पीढ़ी पर पश्चिमी संस्कृति और नैतिक मूल्यों का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। उनमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भौतिकवाद की प्रवृत्ति बढ़ी है। आधुनिक युग में नैतिक मूल्यों के क्षरण की चर्चा आम है। भ्रष्टाचार, हिंसा, और अनैतिकता जैसी समस्याएं बढ़ी हैं। वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण के कारण सांस्कृतिक पहचान का संकट उत्पन्न हुआ है। युवा पीढ़ी अपनी पारंपरिक संस्कृति से दूर होती जा रही है।

संस्कृति और नैतिकता के बदलते स्वरूपः चुनौतियाँ और अवसर

चुनौतियाँ – वैश्वीकरण के कारण स्थानीय संस्कृतियों और परंपराओं का लोप हो रहा है। भौतिकवाद और उपभोक्तावाद के कारण नैतिक मूल्यों में गिरावट आई है। पुरानी और नई पीढ़ी के बीच संस्कृति और नैतिकता को लेकर मतभेद बढ़े हैं।

अवसर – विभिन्न संस्कृतियों के मिश्रण से नए सांस्कृतिक रूप उभर सकते हैं। समाज में नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करने के लिए शिक्षा और जागरूकता का उपयोग किया जा सकता है। वैश्वीकरण के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों और नैतिक मूल्यों का आदान–प्रदान हो सकता है।

निष्कर्ष : संस्कृति और नैतिकता समय और परिस्थितियों के अनुसार निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं। आधुनिकता, वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सामाजिक जागरूकता ने पारंपरिक मूल्यों को एक नई दिशा दी है। जहाँ संस्कृति विभिन्न सभ्यताओं और डिजिटल युग के प्रभाव को आत्मसात कर रही है, वहीं नैतिकता भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानवाधिकारों और सामाजिक समानता की ओर उन्मुख हो रही है। हालांकि, इन परिवर्तनों के कारण पारंपरिक और आधुनिक मूल्यों के बीच संघर्ष भी देखने को मिलता है। ऐसे में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, ताकि संस्कृति और नैतिकता समाज में सामंजस्य और प्रगति के वाहक बने रहें।

IAJESM Quality Of Work... Never Ended...

References:

1. गुप्ता, आर. (2018). भारतीय समाज में नैतिकता और संस्कृति के बदलते आयाम. नई दिल्लीः संस्कृत भारती पब्लिकेशन।
2. शर्मा, एस. (2020). वैश्वीकरण और सांस्कृतिक परिवर्तनः एक अध्ययन. जयपुरः राष्ट्रीय प्रकाशन।
3. सिंह, पी. (2019). नैतिकता और आधुनिक समाजः एक तुलनात्मक विश्लेषण. मुंबईः लोकधारा पब्लिशिंग।
4. दुबे, एम. (2021). संस्कृति, परंपरा और आधुनिकताः सामाजिक दृष्टिकोण. कोलकाताः भारतीय अध्ययन केंद्र।
5. यूनाइटेड नेशंस डेवलपमेंट प्रोग्राम रिपोर्ट (2022). वैश्वीकरण और सामाजिक मूल्यः एक विश्वव्यापी परिप्रेक्ष्य।